उठाया हुआ भेंट एक विशेष प्रकार का भेंट होता है, जो अन्य भेंटों से अधिक सम्मानित होता है। यह परमेश्वर के आशीर्वादों के लिए गहरी कृतज्ञता, श्रद्धा, और समर्पण प्रकट करने का तरीका है। उठाया हुआ भेंट अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसमें बलिदान शामिल होता है, और इसे एक उच्च उद्देश्य और भावना के साथ दिया जाता है।

उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति सामान्य भेंट दे सकता है, जो आज्ञाकारिता से दी जाती है, लेकिन उठाया हुआ भेंट वह होता है जो परमेश्वर की महानता के सम्मान में अलग होता है और जो अधिक मूल्यवान और महंगा होता है। यह भेंट विशेष रूप से परमेश्वर के लिए अलग रखी जाती है, अक्सर किसी विशेष प्रार्थना या बड़ी कृतज्ञता के रूप में।

पुनरुत्पत्ति 26:10 में परमेश्वर इस प्रकार निर्देश देते हैं:

“और तुम प्रभु परमेश्वर के सामने उस गेहूं के पहाड़ की पहली
फल की एक मुठ्ठी लेकर आओ, जो तुमने लगाया है।”
(पुनरुत्पत्ति 26:10)

यह पद बताता है कि उठाया हुआ भेंट उस भूमि से जुड़ा होता है जिसे

परमेश्वर ने अपने लोगों को दिया, और यह उनके धन्यवाद का प्रतीक है। यह एक महत्वपूर्ण भेंट थी जो परमेश्वर की वफादारी के जवाब में दी जाती थी।

उठाए हुए भेंट की प्रकृति

उठाया हुआ भेंट कोई आकस्मिक या छोटा कार्य नहीं होता। इसमें सोच-समझकर तैयारी, बलिदान, और गहराई से विचार करना शामिल होता है। यह सिर्फ एक सामान्य भेंट नहीं होता, जो दिनचर्या या मजबूरी से दिया जाता है। उदाहरण के लिए, ज़कात (इस्लाम में अनिवार्य दान) या प्रथम फलों का भेंट (फसल का पहला हिस्सा) उठाए हुए भेंट नहीं माने जाते क्योंकि वे अनिवार्य होते हैं और इनमें वही सम्मान नहीं होता।

बाइबल में लिखा है कि परमेश्वर हमारे पास से सबसे अच्छा चाहता है। मलाकी 1:6-8 में लिखा है:

“बेटा अपने पिता का सम्मान करता है, और नौकर अपने स्वामी का; अगर मैं पिता हूं, तो मेरा सम्मान कहां है? … क्या तुम अंधे जानवरों को बलि चढ़ाते हो? क्या तुम अपंग या बीमार जानवरों
को बलि चढ़ाते हो? उन्हें अपने राज्यपाल के सामने पेश करो,

क्या उसे यह अच्छा लगेगा? क्या वह तुम्हें स्वीकार करेगा?” (मलाकी 1:6-8)

यह पद स्पष्ट करता है कि परमेश्वर चाहता है कि हमारे भेंट हमारे सम्मान और श्रद्धा को दिखाएं, और वह ऐसे भेंटों को अस्वीकार करता है जो कम मूल्यवान या अनदेखी के साथ दी जाती हैं।

क्यों उठाया हुआ भेंट अलग होना चाहिए

उठाया हुआ भेंट दूसरों से अलग इसलिए होना चाहिए क्योंकि यह हमारे द्वारा दी जाने वाली सर्वोच्च सम्मान की अभिव्यक्ति है। इसलिए इसे “उठाया हुआ” कहा जाता है — यह दूसरों से ऊपर होता है, चाहे बलिदान की कीमत हो या हृदय की भावना।

ऐसा भेंट देना जो हमें कम कीमत में पड़े या जो परमेश्वर के योग्य न हो, वह अपमानजनक है। 2 शमूएल 24:24 में दाऊद ने कहा:

“पर राजा ने अरुना से कहा, ‘नहीं, मैं तुम्हें इसका मूल्य दूंगा; मैं प्रभु, अपने परमेश्वर को ऐसा जला-देने वाला
बलिदान नहीं दूंगा जो मुझे कुछ न पड़े।’ इसलिए दाऊद ने

थ्रेसिंग फ्लोर और बैलों को खरीदा और पचास सिक्के चांदी दिए।”
(2 शमूएल 24:24)

दाऊद जानते थे कि जो भेंट उन्हें कुछ न पड़े, वह परमेश्वर के योग्य नहीं है। उसी तरह, उठाया हुआ भेंट परमेश्वर के आशीर्वाद के पैमाने को दिखाना चाहिए।

खराब भेंट देने का पाप

खराब या अपर्याप्त भेंट देना, विशेष रूप से जब परमेश्वर ने हमें प्रचुर रूप से आशीर्वाद दिया हो, अपमानजनक और पापपूर्ण माना जाता है। यह किसी को बड़ा उपहार देने का वादा करने और फिर सस्ता सामान देने जैसा होता है, जिससे वह आहत हो सकता है। हागाई 1:7-9 में लिखा है:

“यहोवा सर्वशक्तिमान कहता है, अपने रास्तों पर ध्यान दो।
तुमने बहुत बोया, पर कम काटा; तुम खाते हो, पर तृप्त नहीं
होते; तुम पीते हो, पर संतुष्ट नहीं होते। तुम पहनते हो, पर
गरम नहीं होते; जो कमाते हो, वह फुहर में चला जाता है। यह सब

इसलिए कि मेरा घर वीरान पड़ा है, और तुम सब अपने-अपने घरों
को बनाने में लगे हो।”
(हागाई 1:7-9)

यह पद दिखाता है कि परमेश्वर हमारे भेंटों और बलिदानों की गुणवत्ता की परवाह करता है, खासकर जब हम आशीषित होते हैं। यदि हम परमेश्वर को अपने सर्वश्रेष्ठ से सम्मानित नहीं करते, तो हम उसकी आशीषों को खो सकते हैं।

महत्वपूर्ण भेंट की शक्ति

जब परमेश्वर ने हमारे जीवन में कुछ महान किया है, तो हमारी प्रतिक्रिया उसके आशीष के पैमाने के अनुरूप होनी चाहिए। एक महत्वपूर्ण भेंट, जो किसी बड़े चमत्कार या आशीष के जवाब में दी जाती है, छोटे और सामान्य भेंट से कहीं अधिक प्रभावशाली होती है। लूका 21:1-4 में यीशु ने उस गरीब विधवा की प्रशंसा की, जिसने दो छोटी सिक्के दीं:

“सच कहता हूँ तुम्हें, इस गरीब विधवा ने सब से अधिक दिया है। क्योंकि सब ने अपनी समृद्धि से दिया, पर उसने अपनी दरिद्रता

से, जो उसके जीने के लिए सब था, सब कुछ दिया।”
(लूका 21:1-4)

हालांकि विधवा का भेंट आर्थिक रूप से छोटा था, पर वह उठाया हुआ भेंट था क्योंकि उसे यह सब कुछ देना पड़ा। उसके बलिदान और समर्पण ने उसके भेंट को दूसरों से बहुत शक्तिशाली बनाया।

निष्कर्ष

उठाया हुआ भेंट परमेश्वर को सर्वोच्च सम्मान देने के लिए दिया जाता है, अक्सर उसकी महानता के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में या बड़ी आशीष प्राप्त करने के बाद। इसमें बलिदान की आवश्यकता होती है और यह महत्वपूर्ण मूल्य का होना चाहिए। परमेश्वर ऐसे भेंट चाहता है जो सच्चे और समर्पित हृदय से दिए जाएं, न कि केवल बाध्यता या सुविधा के कारण।

2 कुरिन्थियों 9:7 में पौलुस सिखाते हैं:

“हर कोई मन में जो ठाना है वैसा दे, अनिच्छा या मजबूरी से

नहीं, क्योंकि परमेश्वर प्रसन्न हृदय से देने वाले से प्रेम करता है।”
(2 कुरिन्थियों 9:7)

हम परमेश्वर को अपना सर्वश्रेष्ठ दें, यह जानते हुए कि वह उन लोगों का सम्मान करता है जो सच्चाई, समर्पण, और बलिदान के साथ देते हैं।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp